

Padma Shri



SHRI AJAY KUMAR MANDAVI

Shri Ajay Kumar Mandavi is a tribal craftsman of wood carving, an environmentalist, and a social reformer.

2. Born on 11th October 1967 in a Gond tribal family, Shri Mandavi was a child prodigy in art. He never got any formal training of wood carving and learnt the art by observing his father. His journey as a wood carving artist began, while making small boats and wooden toys on the banks of the river in the village. He also used to make small idols of Lord Ganesh. In the subsequent years, he also carved many other objects including the National Anthem and other significant symbols and some of the mythological faces.

3. Shri Mandavi gained a name for himself, when he was asked to train the inmates in Kanker Jail. During the tenure of his training in Kanker, he came up with some remarkable art pieces, which brought him national and international acclaim. The District Jail of Kanker, was recognized and placed in the Golden Book of World Records for making the largest wooden piece of “Vande Matram” in the form of wooden letters (44 feet long and 22 feet wide).

4. Shri Mandavi also formed the Shanta Art Group, having most of the members escaped from Maoist incidents at different times and joined the mainstream of society through art. It is an initiative for the rehabilitation of prisoners. He has led several reform initiatives such as Child development along with youth and women employment under National Tribal Reform Projects. He has also been associated with social welfare activities of Government and private agencies for the cause of tribals.

5. Shri Mandavi has won many awards and social acclaims for his selfless services and craftsmanship. He was honored by the Chhattisgarh State Government for his craftsmanship in 2006. Got a place in the Limca book of Record in 2007 for making unique wooden calligraphic art. In 2008, the then Hon'ble President of India honoured him for Wooden Calligraphic Art and Wooden Sculptures in New Delhi. In the year 2008, he was felicitated by the then Union Defense Minister for creating the National Anthem (Jana-Gana-Mana) and National Song (Vande Matram) in wooden calligraphy. In the same year, he was felicitated for his Wooden Sculpture Art by Shri Shri Ravishankar, the founder of Art of Living, in Jagdalpur, for creating Bhagavad Geeta in wooden letters. He was conferred with the title of Bastar Art-son by Arzoo Foundation, Bhilai, in 2009. In the same year Citizen Global Platform Finland, acknowledged his Eco-friendly brick-making technique through red soil or Gravelly soil (Moram) as a unique Environment conserving initiative. In 2018 his Wooden Calligraphic sculpture of “Vande-Matram” was acknowledged by the Golden Book of World Record as the largest wooden creative work. Recently he was invited as “Youth Icon” in the Youth-20 Samvad Programme, jointly organized by Union Ministry of Youth Welfare and Nehru Yuwa Kendra Sangathan (under the G-20 year long activities).



श्री अजय कुमार मण्डावी

श्री अजय कुमार मण्डावी काष्ठ नक्काशी के जनजातीय शिल्पकार, पर्यावरणविद् और समाज सुधारक हैं।

2. 11 अक्टूबर 1967 को, एक गोंड आदिवासी परिवार में जन्मे, श्री मण्डावी बचपन से ही कला के क्षेत्र में विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कभी भी काष्ठ नक्काशी का कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया और अपने पिता को देखकर यह कला सीखी। लकड़ी पर नक्काशी करने वाले कलाकार के रूप में उनकी यात्रा गाँव में नदी के किनारे छोटी नाव और लकड़ी के खिलौने बनाते हुए शुरू हुई। वह भगवान गणेश की छोटी-छोटी मूर्तियाँ भी बनाते थे। बाद के वर्षों में, उन्होंने राष्ट्रगान और दूसरे महत्वपूर्ण प्रतीकों और कुछ पौराणिक चेहरों सहित कई अन्य वस्तुओं को भी लकड़ी पर उकेरा।
3. श्री मण्डावी को उस समय प्रसिद्धि प्राप्त हुई, जब उन्हें कांकेर जेल में कैदियों को प्रशिक्षित करने के लिए कहा गया। कांकेर में प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने कुछ उत्कृष्ट कलाकृतियाँ बनाई, जिससे उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली। कांकेर की जिला जेल को लकड़ी के अक्षरों में “वंदे मातरम” की विशालतम कृति बनाने का श्रेय प्राप्त हुआ और इसे गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया।
4. श्री मण्डावी ने शांता कला समूह का भी गठन किया, जिसके अधिकांश सदस्य अलग-अलग समय में माओवादी गुटों से निकल कर आए थे और कला के माध्यम से समाज की मुख्य धारा में शामिल हुए। यह कैदियों के पुनर्वास की एक पहल है। उन्होंने राष्ट्रीय जनजातीय सुधार परियोजनाओं के तहत युवाओं और महिलाओं के रोजगार के साथ-साथ बाल विकास जैसी कई सुधार पहल का नेतृत्व किया है। वह जनजातीय हितों के लिए सरकारी और निजी एजेंसियों की समाज कल्याण गतिविधियों से भी जुड़े रहे हैं।
5. श्री मण्डावी ने अपनी निस्वार्थ सेवाओं और शिल्प कौशल के लिए कई पुरस्कार और सामाजिक प्रशंसा प्राप्त की है। उन्हें 2006 में अपने शिल्प कौशल के लिए छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। लकड़ी की अनूठी कैलिग्राफिक कलाकृति बनाने के लिए 2007 में उन्हें लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में जगह मिली। 2008 में, नई दिल्ली में भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति ने उन्हें बुडन कैलिग्राफिक आर्ट और लकड़ी की मूर्तियों के लिए सम्मानित किया। वर्ष 2008 में, उन्हें लकड़ी से की गई कैलिग्राफी में राष्ट्रगान (जन-गण-मन) और राष्ट्रीय गीत (वंदेमातरम) बनाने के लिए तत्कालीन केंद्रीय रक्षा मंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। उसी वर्ष, जगदलपुर में लकड़ी के अक्षरों में भगवद्गीता उकेरने के लिए आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर ने उन्हें काष्ठ शिल्पकला के लिए सम्मानित किया गया। 2009 में आरजू फाउंडेशन, भिलाई द्वारा उन्हें बस्तर कला-पुत्र की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उसी वर्ष सिटीजन ग्लोबल प्लेटफॉर्म फ़िनलैंड ने लाल मिट्टी या बजरी मिट्टी (मोरम) से इकोफ्रेंडली ईट बनाने की उनकी तकनीक को पर्यावरण संरक्षण की एक अनूठी पहल के रूप में मान्यता दी। 2018 में “वंदे-मातरम” की उनकी लकड़ी की कैलिग्राफी को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा लकड़ी के सबसे बड़े रचनात्मक कार्य के रूप में स्वीकार किया गया। हाल ही में उन्हें केंद्रीय युवा कल्याण मंत्रालय और नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम (जी-20 की वर्ष पर्यंत चलने वाली गतिविधियों के तहत) यूथ-20 संवाद में “यूथ आइकन” के रूप में आमंत्रित किया गया था।